मिस्टर किंग

रायजा सीकिनेन, चित्रण: हन्नू टैना

हिंदी: छाया भदौरिया

यहाँ से बहुत दूर, सुदूर समुद्र के तट पर, एक अद्भुत घर था। उस घर में एक छोटा सफेद दाढ़ी वाला राजा रहता था। तो शुरू होती है मिस्टर किंग की कहानी, एक राजा जिसकी एक बड़ी समस्या यह है - उसके पास कोई प्रजा नहीं है। उसका सुंदर महल और जागीरें भी उसे प्रसन्न करने में विफल रहती हैं, क्योंकि प्रजा के बिना वह अकेला और बेकार महसूस करता है। जब एक दिन एक साधारण सी बिल्ली आश्रय के लिए महल में आती है, तो मिस्टर किंग को अचानक पता चलता है कि उसका जीवन एक नई दिशा ले रहा है।

लेखक की मनमोहक कहानी पाठकों की कल्पनाओं को उस सुदूर तट पर धकेल देती है जहाँ कुछ भी हो सकता है। कलाकार के उल्लासपूर्ण जलरंगों में परिप्रेक्ष्य की सापेक्ष अनुपस्थिति मिस्टर किंग के महल की विचित्र प्रकृति और रहस्य को बढ़ाती है, जो पाठ में पहले से ही प्रस्तुत की गई चीज़ों को एक अतिरिक्त आयाम देता है!'

- प्रकाशक साप्ताहिक

मिस्टर किंग

रायजा सीकिनेन

चित्रण: हन्नू टैना

हिंदी: छाया भदौरिया
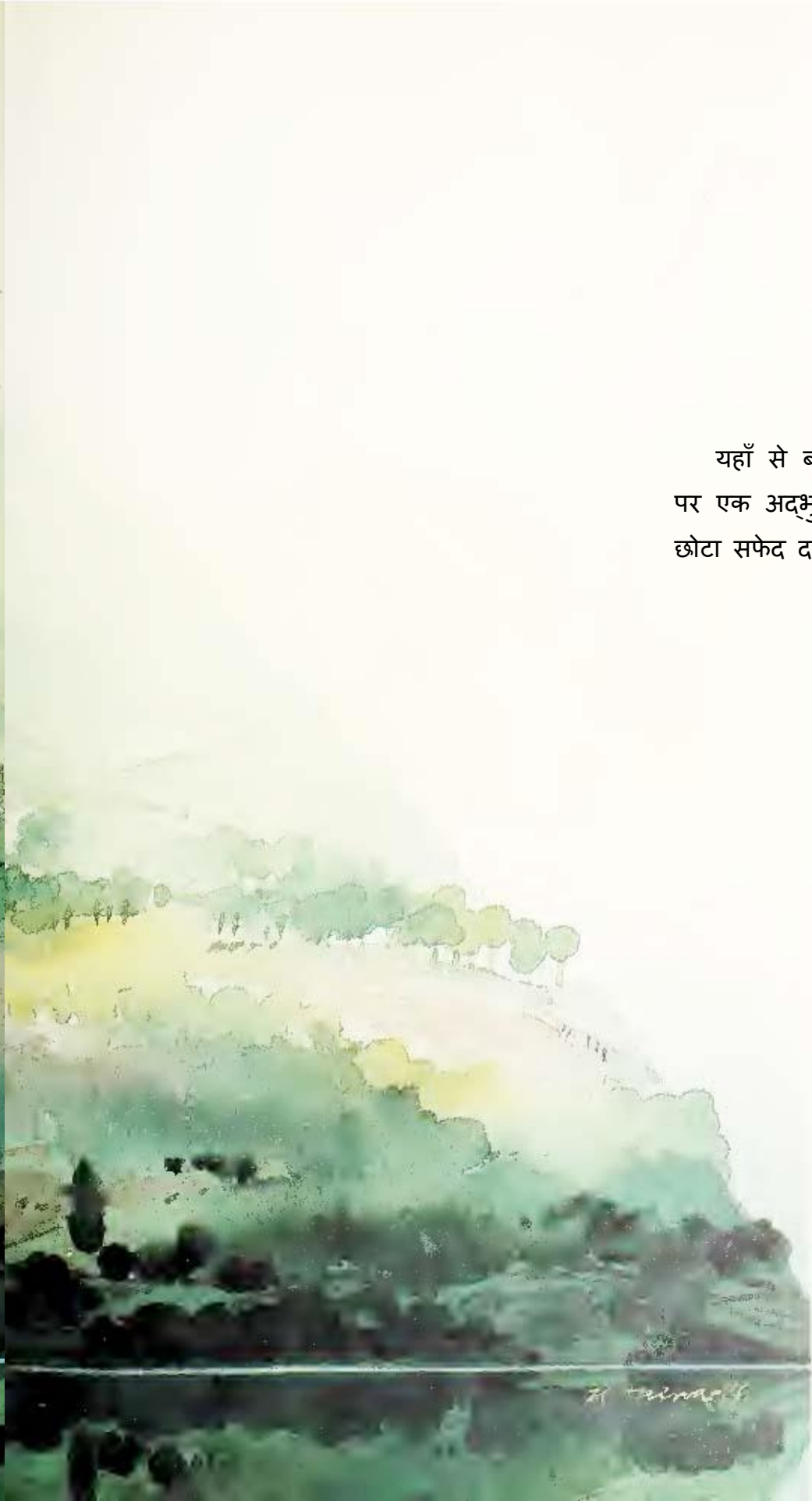
यहाँ से बहुत दूर, सुदूर समुद्र के तट पर एक अद्भुत घर था। और घर में एक छोटा सफेद दाढ़ी वाला राजा रहता था।

घर में अजीब कमरे थे। एक ऐसा कमरा था जिसकी छत शीशे की गुंबद थी। जब सूरज गुंबद से होकर चमका तो पूरा कमरा जगमगा उठा। जब बारिश हुई तो बूंदें गुंबद पर गिरीं और टूटकर बिखर गईं। सर्दियों में, बर्फ आसमान से गुंबद पर गिरती थी और इसे ढक देती थी। रात में चाँद आकाश में चमका और कमरे को रोशन कर दिया, और तारे टिमटिमाते हुए बुझ गए, और यह सब बहुत सुंदर था।

लेकिन राजा ने कभी इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया कि उसके घर में कितना सुंदर कमरा है, क्योंकि वह एकदम अकेला राजा था।

घर में एक पुस्तकालय था, उसकी अलमारियाँ किताबों से भरी रहती थीं जो कि आपस में ही फुसफुसाती रहतीं थी। कविता की किताबों में कविताएँ सुनाई जा रही थीं और फ़ोनोग्राफ़ पर सुंदर गाने बज रहे थे। लेकिन छोटे राजा ने कुछ भी नहीं सुना क्योंकि वह बहुत अकेला था और सुबह से लेकर रात तक केवल अपने अकेलेपन के बारे में ही सोचता रहता था।

"कितना अजीब है ना," राजा ने खुद से कहा। "मैं एक राजा हूँ, लेकिन फिर भी मेरे पास एक भी प्रजा नहीं है।"

कभी-कभी वह राजाओं और उनकी प्रजा के बारे में कहानियाँ पढ़ता था। जिनमें प्रजा सदैव बहुत अधिक संख्या में रहती थी और राजा को ईर्ष्या होती थी।

एक बार राजा समुद्र के किनारे टहलने गया। वह अपने लिए प्रजा खोजना चाहता था।

राजा ने सोचा, "काश, मेरे पास सौ लोगों की ही प्रजा होती।"

सबसे पहले वह समुद्र तट पर दाहिनी ओर चला। लेकिन वहाँ बिल्कुल सुनसान था और जहाँ तक राजा की नजर जा सकती थी, वह उसी तरह चलता रहा।

"काश मेरे पास पचास लोगों की ही प्रजा होती," राजा ने कहा और घूमकर समुद्र तट के बायीं ओर जितना दूर जा सकता था चला गया, लेकिन वहाँ भी समुद्र तट खाली था। अंत में, राजा एक चट्टान पर बैठ गया और इतना उदास हो गया कि उसे यह भी ध्यान नहीं आया कि उस शाम कितना अच्छा सूर्यास्त हो रहा था।

"अगर मेरे पास सिर्फ दस लोगों की भी प्रजा होती तो मैं शायद खुश होता।"

राजा ने कुछ मछुआरों को अपनी नावों के साथ दूर समुद्र में देखा तो तुरंत ही वह खुशी से झूम उठा।

"प्रजा," राजा ने ख़ुशी से कहा, और वह मछुआरों को बुलाने लगा।

"प्रजा," राजा चिल्लाया। "प्रजा, यहाँ पर। मैं राजा हूँ, हुर्रे।"

परन्तु मछुआरों ने उसकी आवाज़ नहीं सुनी, और चिल्लाने से राजा का गला बैठ गया। इसलिए वह उदास होकर घर गया और अपनी पतली रजाई के अंदर घुसकर सो गया और फिर राजा ने उन लोगों का सपना देखा जो उसे देखते ही "हुर्रे" चिल्लाते थे।

सुबह राजा की नींद एक अजीब आवाज़ से खुली। और उसने महसूस किया कि इससे पहले उसने कभी ऐसी आवाज़ नहीं सुनी थी।

"हो सकता है मेरी प्रजा यहाँ आई हो," राजा ने कहा और दरवाज़ा खोलने चला गया। दरवाज़े की देहरी पर एक बड़ी, रोएँदार बिल्ली बैठी थी।

"सुप्रभात," राजा ने बड़ी गरिमा के साथ कहा। "मैं राजा हूँ, हुर्रे।"

'और मैं एक बाघ हूँ,' बिल्ली ने कहा।

राजा ने कहा, "तुम मेरी प्रजा हो।"

"मुझे अंदर आने दो," बिल्ली ने कहा।

"मुझे भूख लगी है और मुझे ठंड लग रही है।"

राजा ने बिल्ली को अपने घर में आने दिया, और बिल्ली इधर-उधर घूमती रही और देखती रही कि यह कितना अजीब और अद्भुत घर था। बिल्ली को काँच के गुंबद वाली छत पसंद थी, और उसे वे कविताएँ भी पसंद आईं जो किताबें पुस्तकालय के अँधेरे में एक-दूसरे से फुसफुसाती रही थीं, और बिल्ली को संगीत भी पसंद आया।

बिल्ली ने कहा, "तुम्हारा घर कितना सुंदर है।"

"हाँ, है ना," राजा ने कहा, और अचानक उसने भी वह सब कुछ देखा जो उसने कई वर्षों में नहीं देखा था। राजा ने कहा, "ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं राजा हूँ," और वह बहुत संतुष्ट था।

"मैं यहीं रहूँगी," बिल्ली ने फैसला किया। इसलिए बिल्ली राजा के साथ रहने लगी और राजा खुश था क्योंकि अब उसके पास एक प्रजा थी।

"मुझे कुछ खाना दो," बिल्ली ने कहा, और राजा तुरंत बिल्ली के लिए कुछ खाना लाने के लिए चला गया।

बिल्ली ने कहा, "मेरे लिए एक बिस्तर बनाओ," और राजा बिल्ली के लिए रजाई और तकिये की तलाश में इधर-उधर भागने लगा।

"मुझे ठंड लग रही है," बिल्ली ने कहा, और राजा ने चूल्हे पर आग जला दी ताकि बिल्ली खुद को गर्म कर सके।

राजा ने बिल्ली से कहा, "आपके लिए सब कुछ हाज़िर है मेरी प्रजा।"

बिल्ली ने उत्तर दिया, “धन्यवाद। मिस्टर किंग।"

और राजा को इस बात का ध्यान ही नहीं रहा कि वह राजा होते हुए भी बिल्ली की सेवा कर रहा है।

समय बीतता गया, और राजा को बिल्ली की संगति बहुत पसंद आई। बिल्ली ने राजा को वह सब कुछ दिखाया जो राजा अपने अकेलेपन में भूल गया था - सूर्यास्त और बर्फबारी और चंद्रमा जो समुद्र में मछुआरों की नावों की तरह आकाश में घूमता था।

कभी-कभी राजा एक दर्पण के पास से गुजरता था, और जब उसने अपना प्रतिबिंब देखा तो उसने कहा, "राजा, हुर्रे।" और उसने खुद को सलाम किया।

और फिर क्या हुआ कि राजा के घर के बगल में एक घर बनाया गया।

“अधिक प्रजा,” राजा ने कहा। वह अपने पड़ोसियों के पास अपना परिचय देने के लिए गया।

"मैं राजा हूँ और यह मेरा टाइगर है।"

“हमारे पड़ोसी का नाम राजा है,” पड़ोसियों ने एक दूसरे से कहा। "और उसके पास एक बिल्ली है जिसका नाम टाइगर है।"

वहाँ एक के बाद एक घर बनते गए, जब तक कि वह एक छोटा सा कस्बा नहीं बन गया। अब राजा संतुष्ट था। जब वह सड़कों पर चलता था, तो लोग उससे कहते थे, "नमस्ते, मिस्टर किंग।" उसके मेलबॉक्स पर बड़े अक्षरों में "KING" शब्द लिखा हुआ था। और जब उसे एक पत्र मिला, तो लिफाफे पर लिखा था "राजा।"

"अब मैं असली राजा हूँ," राजा ने खुद से टिप्पणी की। क्योंकि उसे डर था कि उसकी प्रजा अचानक दूर चली जाएगी, राजा ने उन्हें अपने बगीचे से सेब दिए और उन्हें गुंबददार छत के नीचे बर्फ देखने और कविताएँ सुनने के लिए आमंत्रित किया, और जब उन्होंने देखा कि राजा का घर कितना सुंदर है, तो हर कोई संतुष्ट हो गया।

शाम को राजा और बिल्ली को अक्सर अपने कस्बे से समुद्र तट तक घूमते देखा जाता था।

लोगों का कहना था, "मिस्टर किंग वहाँ सूर्यास्त देखने जाते हैं।"

राजा बिल्ली के साथ किनारे पर बैठता था और लाल सूरज की प्रशंसा करता था, जो सीधे समुद्र में गिरता हुआ प्रतीत होता था। कभी-कभी वह दूर समुद्र में मछुआरों की नावें देखता। तब उसे याद आता कि एक बार वह कितना अकेला था, और वह बिल्ली को सहलाता। और जब बिल्ली गुर्राती थी, तो ऐसा लगता था मानो वह "हुर्रे, हुर्रे, हुर्रे" कह रही हो।

रायजा सीकिनन ने हेलसिंकी विश्वविद्यालय में फिनिश साहित्य, लोक कविता और दर्शन का अध्ययन किया। उन्होंने लघु कथाओं के कई संग्रह प्रकाशित किए हैं और 1984 में साहित्य के लिए फिनलैंड का राज्य पुरस्कार जीता है। सुश्री सीकिनन फिनलैंड के कोटका में रहती हैं, जहाँ वह एक स्वतंत्र लेखिका हैं।

हन्नू टैना ने वयस्कों और बच्चों दोनों के लिए कई पुस्तकों का चित्रण किया है और फिनलैंड की वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों के कई डिप्लोमा जीते हैं। उन्होंने हेलसिंकी विश्वविद्यालय में औद्योगिक कला और ग्राफिक्स का अध्ययन किया और अपने श्याम-श्वेत और पूर्ण-रंगीन चित्रण दोनों के लिए जाने जाते हैं। मिस्टर टैना फिनलैंड के हेलसिंकी में रहते हैं।

"कहानी, किसी की देखभाल करने के मूल्य और सेवा की गरिमा के बारे में एक सौम्य संदेश देती है, जिसे टैना के जलरंग चित्रण द्वारा कुशलता से दर्शाया गया है।

पुस्तक में रंगों की प्रचुरता और बारीकी से उकेरे गए सलोने चित्र मन और आँखों को मोहने वाले हैं।

- पुस्तक सूची

"खूबसूरत जल रंग चित्र, कुछ हद तक जॉन बर्निंगहैम की याद दिलाते हैं, प्रकाश और स्थान, रंग और प्रसन्नता, और शांत बिल्ली, दयालु राजा और हंसमुख विषयों के आनंदमय चित्रण से भरे हुए हैं, जो पूरी तरह से कल्पित कहानी का पूरक हैं!'

- हार्न बुक